पूरक-वाचन

1 क्रिकेट जगत में अनुशासन और टीम भावना

विजय मर्चेन्ट

इन दो शब्दों का प्रयोग तो बहुत अधिक किया जाता है लेकिन सही तरह से समझा बहुत कम जाता है । अनुशासन का अर्थ होता है, कप्तान के आदेशों का पूरी तरह से पालन करना । यदि आपसे कप्तान जल्दी-जल्दी रन बनाने को कहे तो आप उससे विकेट की स्थिति, गेंद कैसी फेंकी जा रही है या पिच की हालत आदि के बारे में किसी प्रकार का तर्क न करें । कप्तान के आदेशों को पालन करने का भरसक प्रयत्न करें ।

किसी भी टीम की सफलता के लिए टीम-भावना बहुत महत्त्वपूर्ण होती है । टीम-भावना का यह मतलब नहीं होता कि टीम के ग्यारह सदस्यों का आपस में मेल-जोल हो, हालाँकि यह भी बहुत जरूरी है । टीम-भावना का अर्थ होता है कि आप अपने व्यक्तिगत संबंधों को दूर रखें और केवल टीम के लिए खेलें, अपने लिए नहीं अधिक-से-अधिक रन तो बनाइए, लेकिन जल्दी बनाइए ताकि उससे आपकी टीम को लाभ भी हो । यहाँ मैं टीम-भावना के तीन उदाहरण प्रस्तुत करूँगा, जिससे कि आपको मेरा आशय ज्यादा अच्छी तरह समझ में आ जाएगा ।

'अ' और 'ब' बल्लेबाजी कर रहे हैं । 'अ' ने 10 से अधिक रन बना लिए हैं । दिन का खेल खत्म होने से 10 मिनट पहले 'ब' आउट हो जाता है । अब 'स' 'अ' के साथ खेलने आता है । उस समय उसकी टीम-भावना उससे यह माँग करती है कि यह खेल का जो थोड़ा-सा समय बचा है, उसमें 'स' को गेंद से जितना बचा सकता है, बचाए । उसे यह भी नहीं सोचना चाहिए कि मैं तो बेहतर बल्लेबाज़ हूँ और इसलिए मेरी विकेट 'स' की तुलना में ज़्यादा कीमती है । यदि वह ऐसा सोचने लगेगा तो इसका अर्थ यह हुआ कि वह अपने लिए खेल रहा है, टीम के लिए नहीं ।

एक दूसरा उदाहरण लें । सोचिए कि 'अ' और 'ब' गेंद फेंक रहे हैं । ऐसे मौके आ सकते हैं जबकि टीम के कप्तान यह चाहते हों कि इस समय उन्हें विकेट नहीं लेनी चाहिए । उस स्थिति में गेंदबाज़ों को अपने कप्तान से किसी प्रकार का तर्क नहीं करना चाहिए, बल्कि उसके आदेश का पालन करना चाहिए ।

एक और उदाहरण फील्ड में कभी-कभी गेंद बहुत उछाल दी जाती है । दो क्षेत्ररक्षक उस गेंद को कैच करने की स्थिति में हैं । 'क' बहुत कुशल क्षेत्ररक्षक है लेकिन वह गेंद से दूर है । 'ख' यों तो गेंद के पास है लेकिन वह कमज़ोर क्षेत्ररक्षक है । टीम-भावना को ध्यान में रखते हुए उस समय 'क' को चाहिए कि वह 'साइड' या 'माइन' पुकारकर उस कैच को लेने के लिए दौड़ पड़े, भले ही यह उसके लिए ज़्यादा कठिन हो ।

इस समय भारतीय टीम में अनुशासन और टीम-भावना के लाभ को पहले से ज़्यादा समझा जाने लगा है । आज हमारे खिलाड़ी टीम के रूप में खेलते हैं, तभी आज हमारा खेल पहले से कहीं ज़्यादा अच्छा है ।

शब्दार्थ

तर्क दलील **भरसक** जहां तक हो सके **आशय** तात्पर्य, उद्देश्य **बेहतर** अपेक्षाकृत ठीक या अच्छा **आदेश** आज्ञा **उदाहरण** मिसाल

•

2 जलियाँवाला बाग में बसंत

सुभद्राकुमारी चौहान

प्रस्तुत कविता में कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने भारत की निहत्थी और शांतिपूर्वक सभा कर रही जनता पर जलियाँवाला बाग में अंग्रेज़ सरकार द्वारा गोली चलाने की मार्मिक कथा का वर्णन किया है । इस घटना से मर्माहत कवयित्री ने वहाँ बसंत से धीरे एवं शांतिभाव से आने का आग्रह किया है ।

यहाँ कोकिला नहीं, काक हैं शोर मचाते ।
काले-काले कीट, भ्रमर कर भ्रम उपजाते ।
कलियाँ भी अधखिली, मिली हैं कंटक-कुल से ।
वे पौधे, वे पुष्प, शुष्क हैं अथवा झुलसे ॥

परिमल-हीन पराग दाग-सा बना पड़ा है ।
हा ! यह प्यारा बाग खून से सना पड़ा है ।
आओ, प्रिय ऋतुराज ! किंतु धीरे से आना ।
यह है शोक-स्थान, यहाँ मत शोर मचाना ॥

वायु चले, पर मंद चाल से उसे चलाना ।
दु:ख की आहें संग उड़ाकर मत ले जाना ।
कोकिल गावे, किंतु राग रोने का गावे ।
भ्रमर करे गुँजार, कष्ट की कथा सुनावे ॥

लाना संग में पुष्प, न हों वे अधिक सजीले ।
हो सुगंध भी मंद, ओस से कुछ-कुछ गीले ।
किंतु न तुम उपहार भाव आकर दरसाना ।
स्मृति में पूजा-हेतु यहाँ थोड़े बिखराना ॥

कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा-खाकर ।
कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी लाकर ।
आशाओं से भरे हृदय भी छिन्न हुए हैं ।
अपने प्रिय परिवार-देश से भिन्न हुए हैं ॥

कुछ कलियाँ अधखिली यहाँ इसलिए चढ़ाना ।
करके उनकी याद अश्रु की ओस बहाना ।
तड़प-तड़प कर वृद्ध मरे हैं गोली खाकर ।
शुष्क पुष्प कुछ वहाँ गिरा देना तुम जाकर ॥

यह सब करना, किंतु, बहुत धीरे से आना ।
यह है शोक-स्थान यहाँ न शोर मचाना ॥

शब्दार्थ

ऋतुराज वसन्तकाल **कीट** कीड़े-मकोड़े **कंटक** काँटा **शुष्क** सूखा, अनार्द **पराग** फूल के भीतरी भाग का धूल **परिमल** सुगंध, सुवास **कोकिला** कोयल **स्मृति में** याद में **ऋतु** मौसम **भ्रम** संशय **मंद** धीमा **आह** दु:ख या क्लेशसूचक शब्द **ओस** शीत (हवा में मिली हुई भाप जो रात्रि के समय सरदी से जमकर जल-कण के रूप में गिरती है ।)

•

3	# सत्साहसी

गणेश शंकर विद्यार्थी

इस लेख में साहस के अनेक रूपों की चर्चा की गई है तथा यह भी बताया गया है कि सत्साहस क्या है । सत्साहस और दुस्साहस में क्या अंतर है यह भी बताया गया है ।

संसार के सभी महापुरुष साहसी थे । संसार के काम, बड़े अथवा छोटे, साहस के बिना नहीं होते । बिना किसी प्रकार का साहस दिखलाए किसी जाति या किसी देश का इतिहास ही नहीं बन सकता । अपने साहस के कारण ही अर्जुन, भीम, भीष्म, अभिमन्यु आदि आज हमारे हृदयों में बसे हैं ।

साहसी के लिए केवल साहस प्रकट करना ही अभीष्ट नहीं क्रोधांध होकर स्वार्थवश साहस दिखाने को किसी प्रकार प्रशंसनीय कार्य नहीं कहा जा सकता । इस प्रकार का साहस चोर और डाकू भी कभी-कभी कर गुज़रते हैं । राजा-महाराजा भी अपनी कुत्सित अभिलाषाओं को पूर्ण करने के लिए कभी-कभी इससे भी बढ़कर साहस के काम कर ड़ालते हैं । ऐसा साहस निम्न श्रेणी का साहस है । इस साहस को किसी भी दृष्टिकोण से सत्साहस नहीं कहा जा सकता ।

मध्यम श्रेणी का साहस प्राय: शूरवीरों में पाया जाता है । वह उनके उच्च विचार और निर्भीकता को भली-भाँति प्रकट करता है । इस प्रकार के साहसी मनुष्यों में बेपरवाही और स्वार्थहीनता की कमी नहीं होती परंतु उनमें ज्ञान की कमी अवश्य पाई जाती है ।

एक बार बादशाह अकबर के पास दो राजपूत नौकरी के लिए आए । अकबर ने उनसे पूछा, ''तुम क्या काम कर सकते हो ?''

वे बोले, ''जहाँपनाह ! करके दिखलाएँ या केवल कहकर ?''

बादशाह ने करके दिखलाने की आज्ञा दी । राजपुतों ने घोड़ों पर सवार होकर अपने-अपने बरछे सँभाले और अकबर के सामने ही एक-दूसरे पर वार करने लगे । बादशाह के देखते-देखते दोनों घोड़ों से नीचे आ गिरे और मरकर ठंडे हो गए । इस प्रकार का साहस निस्संदेह प्रसंसनीय है परंतु ज्ञान की आभा की कमी के कारण निस्तेज-सा प्रतीत होता है ।

सर्वोच्च श्रेणी के साहस के लिए हाथ-पैर की बलिष्ठता आवश्यक नहीं और न ही धन-मान आदि का होना आवश्यक है । जिन गुणों का होना आवश्यक है, वे हैं - हृदय की पवित्रता, उदारता और चरित्र की दृढ़ता । ऐसे गुणों की प्रेरणा से उत्पन्न हुआ साहस, तब तक पूर्णतया प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता, जब तक उसमें एक और गुण सम्मिलित न हो । इस गुण का नाम है, 'कर्तव्यपरायणता' ।

कर्तव्य का विचार प्रत्येक साहसी मनुष्य में होना चाहिए । कर्तव्यपरायण व्यक्ति के हृदय में यह बात अवश्य उत्पन्न होनी चाहिए कि जो कुछ मैंने किया, वह केवल अपना कर्तव्य किया । मारवाड़ के मौरूदा गाँव का ज़मींदार बुद्धन सिंह किसी झगड़े के कारण स्वदेश छोड़कर जयपुर चला गया और वहीं बस गया । थोड़े ही दिनों बाद मराठों ने मारवाड़ पर आक्रमण किया । यद्यपि बुद्धन मारवाड़ को बिलकुल ही छोड़ चुका था तथापि शत्रुओं के आक्रमण का समाचार पाकर और मातृभूमि को संकट में पड़ा हुआ जानकर उसका रक्त उबल पड़ा । वह अपने एक सौ पचास साथियों को लेकर, बिना किसी से पूछे जयपुर से तुरंत चल पड़ा । वह समय पर अपने देश और राजा की सेवा करने के लिए पहुँच गया ।

इस घटना को हुए बहुत दिन हो गए परंतु आज भी मारवाड़ के लोग कर्तव्यपरायण बुद्धन सिंह की वीरता व सत्साहस को सम्मानपूर्वक याद करते हैं । राजपूत महिलाएँ आज भी बुद्धन और उसके साथियों की वीरता के गीत गाती हैं ।

सत्साहसी व्यक्ति में एक गुप्त शक्ति रहती है जिसके बल से वह दूसरे मनुष्य को दु:ख से बचाने के लिए प्राण तक देने को प्रस्तुत हो जाता है । धर्म, देश, जाति और परिवार वालों के लिए नहीं, अपितु संकट में पड़े हुए अपरिचित व्यक्ति के सहायतार्थ भी उसी शक्ति की प्रेरणा से वह संकटों का सामना करने को तैयार हो जाता है । अपने प्राणों की वह लेशमात्र भी परवाह नहीं करता । हर प्रकार के कलेशों को प्रसन्नतापूर्वक सहता है और स्वार्थ के विचारों को वह फटकने तक नहीं देता है । सत्साहस के लिए अवसर की राह देखने की आवश्यकता नहीं है । सत्साहस दिखाने का अवसर प्रत्येक मनुष्य के जीवन में, पल-पल में, आया करता है । देश, काल और कर्तव्य पर विचार करना चाहिए और स्वार्थरहित होकर साहस न छोड़ते हुए कर्तव्यपरायण बनने का प्रयत्न करना चाहिए । यही सत्साहस है ।

शब्दार्थ

साहसी हिम्मती **प्रशंसनीय** प्रशंसा के योग्य **निम्न** नीचा **मध्यम** बीच का **क्लेशों** कष्टों **अभीष्ट** उद्देश्य, ऐच्छिक **कुत्सित** निंदित, नीच **दृष्टिकोण** नज़रिया **सत्साहस** हिम्मत **कर्तव्यपरायण** उचित काम करने वाला **बलिष्ठता** मज़बूती **निर्भीकता** निड़रता **शूरवीर** बहादुर, योद्धा **सर्वोच्च** सबसे ऊँचा

●

4 असाध्य एड्स

दीपिका गुप्त

एड्स एक असाध्य रोग है । मनुष्य इसका इलाज़ ढूँढ़ने में निरंतर लगा हुआ है । इस समय तक इसका कोई इलाज़ नहीं, परंतु सही जानकारी ही हमें इस रोग से बचा सकती है । ऐसी स्थिति में यह जानकारी शिक्षा का एक आवश्यक अंग है । विद्यार्थी निश्चित रूप से इस उपयोगी ज्ञान से लाभान्वित होंगे ।

प्रतिदिन की भाँति आज जब मैं आठवीं क्लास में पहुँची तो कुछ असामान्य-सा शोर हो रहा था । मेरी उपस्थिति को महसूस करते हुए सभी भागकर अपने-अपने निर्धारित स्थान पर जा बैठे । मैं कुछ कहूँ, इससे पहले रोहन बोला – ''मैम आदिल रो रहा है ।''

क्लास लगभग शांत हो चुकी थी । मैंने चारों ओर देखा, मेरी दृष्टि आदिल पर पड़ी । उसकी आँखें लाल और चेहरे पर क्रोध स्पष्ट दिखाई दे रहा था । मैंने पूछा – ''क्या बात है आदिल ?'' उसने कुछ नहीं, कहकर बात को टालना चाहा पर रोहन फिर बोल पड़ा – ''मैम, जतिन और मयंक इसे 'एडिल' ! 'एडिल' ! कहकर चिढ़ा रहे थे ।'' इस पर आदिल ने रोहन को बैठने का इशारा करते हुए मुझसे फिर वही कहा – ''नो मैम कुछ नहीं ।'' मैंने भी यही सोचा कि बच्चे एक-दूसरे का नाम बिगाड़ने की शरारत तो करते ही हैं । मैंने पढ़ाना शुरू कर दिया । एक बार के लिए मैंने मन में यह सोचा कि इतनी-सी बात पर रोने वाला तो आदिल है नहीं । फिर पढ़ाकर बाहर निकली और अगली क्लास में चली गई । यह बात मैं बिलकुल भूल गई थी । छुट्टी के बाद जब मैं स्टाफ रूम से बाहर निकल रही थी तो लगभग सभी बच्चे जा चुके थे । कॉरिडोर खाली था । तभी मैंने रोहन और आदिल को आते देखा और दोनों के गंभीर चेहरों को देखकर सारी बात पुनः याद आ गई मैंने तुरंत पूछा ''आदिल क्या बात है ? मुझे बताओ शायद में तुम्हारी मदद कर सकूँ ।'' आदिल कुछ नहीं बोला । उसकी आँखों में फिर आँसूं तैरने लगे तो रोहन ने बताया – ''मैम इसके दादा जी. एच. आई. वी. पॉज़िटिव हैं, इसलिए मयंक और जतिन इसे एडिल-एडिल कहकर चिढ़ा रहे थे ।'' सुनकर मैं चौंक गई । मैं जिसे बच्चों की शैतानी समझ रही थी, वह तो काफ़ी गंभीर बात थी । स्वयं को संयत कर मैंने कहा – ''यह तो बड़े दु:ख की बात है, पर तुमने यह सब क्लास में क्यों बताया ?'' इस पर आदिल ने बताया कि – ''मयंक के पिताजी डॉक्टर हैं । उन्हीं की देख-रेख में मेरे दादा जी का इलाज चल रहा है ।''

''अच्छा ! ठीक है, मैं उन्हें समझाऊँगी ।'' कहकर मैंने बच्चों को भेज दिया और स्वयं भी घर आ गई ।

घर आकर भी मेरे दिमाग में यही चलता रहा कि यह उपेक्षा करने की बात नहीं, बच्चों को सही मार्गदर्शन की आवश्यकता है । एक बार सोचा कि कल मैं ही उन्हें समझाऊँगी, फिर मुझे कुछ संकोच हुआ कि मैं इस विषय पर इतनी अच्छी तरह बच्चों की सभी जिज्ञासाएँ शांत नहीं कर पाऊँगी । अच्छा तो यही रहेगा कि इस विषय के किसी अच्छे जानकार के साथ बच्चों के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया जाए ।

यह विषय मज़ाक बनाने का नहीं है । संभवतः बच्चों के मन में अधकचरी के साथ-साथ कुछ भ्रांतियाँ भी हैं । इनका निराकरण बहुत ज़रूरी है ।

यही सब सोचते हुए मैंने स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग में कार्यरत अपनी एक मित्र को फ़ोन किया । उनसे बात करते ही मेरी सारी उलझन दूर हो गई । उन्होंने बताया कि स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग का एक स्पेश्यल सेल, स्कूलों के लिए इसी तरह की कार्यशालाएँ आयोजित करता है । मैं जब चाहूँ, वो अपने स्वास्थ्य अधिकारी को स्कूल में भेज सकती हैं ।

अगले दिन सुबह मैं डॉ. अय्यर (स्वास्थ्य अधिकारी) को लेकर क्लास में पहुँची; परिचय के पश्चात् वे सीधे बच्चों से बात करने लगे । सबसे पहले उन्होंने बोर्ड पर लिखा 'एड्स' और बच्चों से पूछा कि ये क्या है ?

लगभग सभी ने हाथ उठाया, सबका उत्तर था कि यह एक बीमारी है । कुछ ने यह भी बताया कि 'यह एक जानलेवा बीमारी है ।'

बच्चों के उत्तर सुनकर डॉ. अय्यर संतुष्ट थे । तभी उन्होंने उन बच्चों की ओर इशारा किया, जो आपस में बातें

कर रहे थे । डॉ. अय्यर ने उन्हीं से पूछा कि वे क्या कहना चाहते हैं ?'' जो भी कहना है, वह खुलकर कहिए और खुलकर पूछिए; हमारी कार्यशाला का यही उद्देश्य है ।''

इस पर बच्चों में से एक ने कहा – ''सर यह एक गंदी बीमारी है, जो गंदे लोगों को होती है ।''

डॉ. अय्यर – ''बेटा आप लोगों ने किसी अच्छी बीमारी का नाम सुना है क्या ?''

क्लास में हँसी का ठहाका लगा । डॉ. अय्यर ने समझाया कि ''हर बीमारी गंदी या खराब ही होती है । पर यह बात कहना गलत है कि यह बीमारी गंदे लोगों को होती है । यह बीमारी किसी को भी हो सकती है । जिसे बीमारी हो गई है, उससे घृणा करना भी गलत है । हमारे समाज में जानकारी के अभाव में लोग एड्स के रोगियों के प्रति बुरा व्यवहार करते हैं । ऐसे भी कई किस्से सामने आए हैं, जब रोगियों को उनके घर वालों ने घर से निकाल दिया । इसलिए सही जानकारी ज़रूरी है । आप हर बात खुलकर पूछिए, मैं आपको पूरी जानकारी दूँगा ।''

इसके बाद डॉ. अय्यर ने श्यामपट्ट (ब्लैक बोर्ड) पर लिखा –

A – एक्वायर्ड (प्राप्त किया हुआ)

I – इम्यूनो (रोगों से लड़ने की क्षमता)

D – डिफिशिएसी (कमी)

S – सिंड्रोम (लक्षणों का समूह)

''एड्स एक भयंकर बीमारी है । यह संसार के लिए एक चुनौती बन चुकी है । विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार लगभग 5 करोड़ वयस्क और 15 लाख बच्चे एच. आई. वी. की चपेट में आ चुके हैं ।'' क्लास बिलकुल शांत थी । सभी ध्यान से सुन रहे थे । आदिल ने हाथ उठाया और पूछा – ''सर ! ये एच. आई. वी. क्या है ?''

डॉ. अय्यर – ''असल में यह एच. आई. वी. ही एड्स की जड़ है । इसे पूरे शब्दों में **ह्यूमन इम्यूनो डेफ़िशिएंसी वायरस** कहते हैं । यह वायरस अर्थात् जीवाणु जिसके शरीर में प्रवेश कर जाता है, उस व्यक्ति में बीमारियों से लड़ने की क्षमता नष्ट हो जाती है ।''

इस बार माधुरी ने पूछा – ''यह वायरस शरीर में प्रवेश कैसे करता है ?''

डॉ. अय्यर – ''यह बात जानना बहुत ज़रूरी है । यही जानकारी आपको एड्स से बचा सकती है । इसे जानने के बाद आप बहुत-सी भ्रांतियों से भी बच सकते हैं । आप समझ जाएँगे कि एड्स के रोगी को छूने से या उसके पास बैठने से यह रोग नहीं फैलता । इसके निम्नलिखित कारण हैं –

(1) संक्रमित सूई (इनफेक्टेड नीडिल)

(क) अनाड़ी डॉक्टर द्वारा रोगी के लिए प्रयोग में लाई गई सूई को यदि किसी स्वस्थ व्यक्ति के लिए पुनः प्रयोग में लाया जाए तो एच. आई. वी. शरीर में प्रवेश कर जाता है ।

(ख) नशीली दवा (ड्रग्स) लेने वालों द्वारा संक्रमित सूई के प्रयोग के समय भी ऐसा हो सकता है ।

(ग) नाक, कान या त्वचा पर किसी भी हिस्से में छेद करवाने के समय ।

(घ) गोदना गुदवाते समय यानी टैटू बनवाने वालों की सूई से भी ऐसा हो सकता है ।

(2) संक्रमित रक्त : शरीर में रक्त की कमी या शल्य चिकित्सा (ऑपरेशन) के समय हमें रक्त की आवश्यकता पड़ती है, उस समय यदि संक्रमित (एच. आई. वी. इन्फ़ेक्टेड) रक्त चढ़ा दिया जाए तो स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में यह विषाणु प्रवेश कर जाता है । रक्त के अतिरिक्त, कभी रक्त के अन्य पदार्थ जैसे – प्लाज़मा, प्लेटलैट्स आदि चढ़वाने के समय भी ऐसा हो सकता है ।

(3) संक्रमित व्यक्ति के साथ असुरक्षित यौन संबंध : यदि कोई स्वस्थ व्यक्ति किसी एच. आई. वी. संक्रमित स्त्री या पुरुष के साथ असुरक्षित शारीरिक संबंध बनाता है तो भी यह विषाणु स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में प्रवेश कर जाता है ।

(4) संक्रमित माँ द्वारा स्तनपान : जो माँ एच. आई. वी. से संक्रमित है, यदि वह बच्चे को अपना दूध पिलाती है तो बच्चे के शरीर में यह विषाणु प्रवेश कर जाता है ।

अत: इन बातों का हमें विशेष ध्यान रखना होगा । यदि इन कारणों से बचा जाए तो हम इस रोग को फैलने से रोक सकते हैं ।''

इस बार सुशांत ने हाथ उठाया – ''सर ! मैं यह जानना चाहता हूँ कि एड्स के रोगी को क्या परेशानी होती है ?''

डॉ. अय्यर – ''एड्स से ग्रस्त व्यक्ति का वज़न लगातार घटने लगता है । रोगी की जाँघ, बगल और गरदन की ग्रंथियों में सूजन आ जाती है । उसे हमेंशा हल्का बुखार रहता है । उसके मुँह व जीभ पर सफ़ेद निशान पड़ जाते हैं । साथ ही उसे अन्य बीमारियों का संक्रमण भी तुरंत घेर लेता है ।

हाँ ! इसके साथ एक बात यह भी जान लीजिए कि ऐसे लक्षण तपेदिक रोग के भी होते हैं, अत: पूरी तरह जाँच करना जरूरी है । एड्स की जाँच एलिसा टेस्ट और वैस्टर्न ब्लॉट नामक रक्त जाँच से होती है ।''

तान्या – ''सर ! जिस दिन कोई व्यक्ति एच. आई. वी. पॉज़िटिव हो जाता है तो क्या उसे उसी दिन बुखार आ जाता है और ग्रंथियाँ सूज जाती हैं ?''

डॉ. अय्यर – ''ये एक अहम सवाल है । असल में एच. आई. वी. के शरीर में प्रवेश करते ही कुछ पता नहीं लगता ।

संक्रमित व्यक्ति भी सामान्य व्यक्ति जैसा ही दिखाई देता है । इसे एड्स की स्थिति तक पहुँचने में 7 से 10 वर्ष तक का समय लगता है । कोई एच. आई. वी. पॉज़िटिव है, इसकी जानकारी केवल रक्त की जाँच से ही मिलती है ।

आप मेरे कोट पर यह जो लाल रिबन देख रहे हैं, यह एड्स के विरूद्ध संघर्ष का प्रतीक है । एड्स के ख़िलाफ़ विश्वव्यापी अभियान सन 1977 से आरंभ हुआ । सभी देशों की यही धारणा है कि विश्व के सभी लोग इस रोग की गंभीरता को समझें । इसके कारणों को जानकर इसे फैलने से रोकें ।

संयुक्त राष्ट्र संघ (यू. एन. ओ.) ने 1 दिसंबर को अंतर्राष्ट्रीय एड्स दिवस घोषित किया है । हमारे देश में एड्स नियंत्रण कार्यक्रम 1999 में 15 सौ करोड़ रुपयों की लागत से शुरू किया गया । दूसरा अभियान कार्यक्रम 2004 से लागू किया गया । इस रोग से लड़ने के लिए सरकारी और गैर–सरकारी संस्थाँ (एन. जी. ओ.) समाज की मदद कर रही हैं । विद्यार्थियों में इस रोग के प्रति जागरूकता लाने के लिए प्रतिवर्ष 20,000 विद्यालयों में जानकारी देने का लक्ष्य रखा गया है । आपके विद्यालय में आज की कार्यशाला भी इसी अभियान का अंग है ।''

अंत में डॉ. अय्यर ने शांत बैठकर सुनने और अच्छे प्रश्न पूछने के लिए बच्चों का धन्यवाद करते हुए एक आग्रह किया – ''आप सभी इस देश के आने वाले ज़िम्मेदार नागरिक हैं । यह याद रखिए आज तक इस रोग का कोई उपचार नहीं है । अत: इस रोग के कारणों को जानने के बाद सदैव इस रोग से बचकर रहें ।''

याद रखें कि ''एड्स के रोगी को घृणा या मज़ाक का विषय मत बनाइए । इन रोगियों का मनोबल बढ़ाना और इनमें जीने की इच्छा जगाना ज़रूरी है । मुझे विश्वास है आप लोग ऐसा ही करेंगे ।''

सभी बच्चों ने डॉ. अय्यर को धन्यवाद दिया । सबके चेहरे जानकारी की परिपक्वता से चमक रहे थे ।

मैंने डॉ. अय्यर का धन्यवाद करते हुए उन्हें पूरी क्लास के सामने बाताया कि हमारी क्लास में बड़े ही समझदार घरों के बच्चे आते हैं । इनके माता–पिता एच. आई. वी. पॉज़िटिव लोगों को प्यार से अपने घर में रखते हैं और उनका इलाज़ भी करते हैं । आपके द्वारा दी गई जानकारी इन्हें और भी समझदार बनाएगी ।

शब्दार्थ

असामान्य असाधारण **उपेक्षा** अवहेलना, ध्यान न देना **जिज्ञासा** जानने की इच्छा **निराकरण** उपाय, उपचार **संक्रमित** रोग ग्रस्त **मनोबल** मन की ताकत **टैटू** गोदना, त्वचा के नीचे रंग भरकर आकृतियाँ या चित्र बनवाना **कॉरिडोर** बरामदा **मार्गदर्शन** दिशा दिखाना **स्पेश्यल सैल** खास विभाग **तपेदिक** क्षयरोग **असाध्य** उपचार रहित **संकोच** झिझक **भ्रांति** भ्रम, अपूर्ण ज्ञान **घृणा** नफ़रत **अनाड़ी** बुद्धू **अभियान** व्यापक कार्य

●

5 बंटी की उलझन

मन्नू भण्डारी
(जन्म : सन् 1931 ई.)

श्रीमती मन्नू भण्डारी का जन्म मानपुरा (मध्य प्रदेश) में हुआ था । उनका बचपन राजस्थान में व्यतीत हुआ । आरंभिक शिक्षा और इंटर तक की पढ़ाई अजमेर में संपन्न हुई । उन्होंने बी. ए. कलकत्ता यूनिवर्सिटी से किया और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से एम. ए. प्रायवेट किया । मन्नू भण्डारी को लेखन संस्कार पैतृक-दाय के रूप में प्राप्त हुए थे । 'मैं हार गयी', 'तीन निगाहों की तस्वीर', 'आँखों देखा झूठ' उनकी प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं । उन्होंने 'महाभोज' और 'आपका बंटी' उपन्यास भी लिखे । उन्होंने अपनी कहानियों और उपन्यासों में आधुनिक मध्यम वर्ग का विशेषत: स्त्रियों का चित्रण किया है । इनमें बदले हुए मानव संबंधों का निरूपण है । आज शिक्षित पति-पत्नी अपने दाम्पत्यजीवन की समस्याओं का हल तलाक में देखते हैं, परंतु इसमें सबसे ज्यादा पीड़ा भोगते हैं, उनके निर्दोष बच्चे । प्रस्तुत अंश 'आपका बंटी' उपन्यास से लिया गया है ।

शकुन और अजय पढ़े-लिखे हैं । साथ नहीं रह पाये । परंतु उनके बेटे बंटी को दोनो चाहिए । माँ और पिता के बीच झूलते बंटी की वेदना जहाँ हमें छू जाती है, वहाँ हमें तलाक के बारे में नये सिरे से सोचने को बाध्य भी करती है ।

आज पापा आनेवाले हैं ।

दस बजे बंटी को सरकिट हाउस पहुँच जाने को लिखा है । मम्मी है कि पता नहीं कैसा मुँह लिए घूम रही है । न हँसती है, न बोलती है । बस गुमसुम । इस बार वकील चाचा के जाने के बाद से ही मम्मी ऐसी हो गई है । वकील चाचा भी एक ही हैं बस । खुद तो बोल-बोलकर ढेर कर देंगे और मम्मी बेचारी की बोलती बंद कर जाएँगे । पता नहीं क्या हो गया है मम्मी को ? उसे देखना शुरू करेंगी तो देखती ही रहेंगी, ऐसे मानो उसके भीतर कुछ ढूँढ़ रही हों । रात को कहानी भी नहीं सुनाती । ज्यादा कहो तो कह देती है, 'सो जा, कल सुनाऊँगी ।' वह तो सो ही जाता है पर मम्मी को ऐसा करना चाहिए ?

उस दिन रात में पता नहीं, कब बंटी की नींद खुल गई । देखा, दूर पेड़ के नीचे कोई खड़ा है । डर के मारे उससे तो चीखा तक नहीं गया था, बस साँस जैसे घुटकर रह गई थी । और वे मम्मी निकली । उसके बाद कितनी देर तक मम्मी उसे थपकाती रही, दिलासा देती रही, पर भीतर दहशत जैसे जमकर बैठ गई थी । आधी रात को ऐसे कहीं घूमा जाता होगा ? चाचा जो कह गये थे गड़बड़ होने की बात । वह बिलकुल ठीक है । जरूर कुछ गड़बड़ हुआ है । मम्मी पहले तो ऐसी नहीं थी । पर वह क्या करे ? मम्मी जब चुप-चुप हो जाती है तो उसका मन बिलकुल नहीं लगता ।

परसों ही तो पापा की चिट्ठी आई थी । लिफाफे पर मम्मी का नाम लिखा था । पिछली बार तो लिफाफे पर भी उसका नाम था । अंदर भी दो कागज निकले, एक मम्मी खुद पढ़ने लगी, दूसरा उसे पकड़ा दिया । तो क्या मम्मी के पास भी पापा की चिट्ठी आई है ? मम्मी-पापा क्या दोस्ती करनेवाले हैं ? उसने अपनी चिट्ठी पढ़ ली और फिर मम्मी की ओर ध्यान से देखने लगा । मम्मी क्या खुश नजर आ रही है ? कहीं कुछ नहीं, बस वैसे ही चुप बैठी है, मानो पापा की कोई चिट्ठी ही नहीं आई हो । एक बार उसकी चिट्ठी पढ़ने तक के लिए नहीं माँगी । पिछली बार तो केवल उसी के पास चिट्ठी आई थी और उसे पढ़कर ही मम्मी कितनी प्रसन्न हुई थीं । पापा के पास भेजने से पहले उसे अपनी बाँहों में भरकर इतना प्यार किया था, इतना प्यार किया था मानो वह कहीं भागा जा रहा हो । और जब वह लौटकर आया था तो मम्मी उससे सवाल पर सवाल पूछे जा रही थीं....'और क्या कहा और क्या कहा'....के मारे परेशान कर दिया था ।

मम्मी से छिपकर उसने मम्मीवाला पत्र उठाकर देखा, घसीटी हुई अंग्रेजी की चार-छ: लाइनें थीं, वह कुछ भी समझ नहीं सका । उसका पत्र हिन्दी में था और बड़े-बड़े साफ अक्षरों में ।

परसों रात को जब वह सोया तो बराबर उम्मीद कर रहा था कि मम्मी जरूर पहले की तरह प्यार करेंगी, कुछ कहेंगी । पर उन्होंने कुछ नहीं कहा, सिर्फ पूछा, 'तू जाएगा पापा के पास ?' यह भी कोई पूछने की बात थी भला । पापा आ रहे हैं और वह जाएगा नहीं ? उसके बाद मम्मी बोली नहीं ।

इस समय मम्मी उदास बिलकुल नहीं हैं । मम्मी की उदासी वह खूब पहचानता है । बिना आँसू के भी आँखें कैसी भीगी-भीगी हो जाती हैं ।

अच्छा है, बैठी रहें ऐसी ही । वह तब पापा के पास जाकर खूब घूमेगा, चीजें खरीदेगा, हाँ, नहीं तो ।

वह जल्दी-जल्दी तैयार हो रहा है और मन ही मन कहीं उन चीजों की लिस्ट तैर रही है जो उसे माँगनी है । कैरम बोर्ड जरूर लेगा, एक व्यू मास्टर भी ।

'दूध-दलिया खा लो ।' फूफी अलग ही अपना मुँह फुलाये घूम रही हैं । पिछली बार भी पापा आये थे तो यह ऐसे ही भन्ना रही थी, जैसे इसकी भी पापा से लड़ाई हो ।

‘मैं नहीं खाता दूध-दलिया । बस रोज सड़ा-सा दूध-दलिया बनाकर रख देती है ।’

‘बंटी, क्या बात है ?’ कैसी सख्त आवाज़ में बोल रही है मम्मी । बंटी भीतर ही भीतर सहम गया । धीरे से बोला, ‘हमें अच्छा नहीं लगता दूध-दलिया ।’

‘क्यों, दूध-दलिया तो तुझे खूब पसंद है । एक दिन भी न बने तो शोर मचा देता है । आज ही क्या बात हो गई ?’

‘पसंद है तो रोज-रोज वही खाओ, एक ही चीज बस । मैं नहीं खाता ।’

‘देख रही हूँ जैसे-जैसे तू बड़ा होता जा रहा है, वैसे ही वैसे जिद्दी और ढीठ होता जा रहा है । अच्छा है, भद्द उड़वा सबके बीच मेरी ।’

कैसे बोल रही है मम्मी । इसमें भद्द उड़वाने की क्या बात हो गई । वह नहीं खाएगा दूध-दलिया, बिना नाश्ता किये ही चला जाएगा ।

वह मेज से उठ गया तो मम्मी ने एक बार भी नहीं कहा कि कुछ और बना दो । न कहें, उसका क्या जाता है ?

हीरालाल को कल ही कह दिया था कि ठीक नौ बजे आ जाना । साढ़े नौ बज रहे हैं पर उसका पता नहीं । बंटी बेचैनी से इधर-उधर घूम रहा है । थोड़ी-थोड़ी देर में घड़ी देख लेता है । मम्मी किताब लेकर ऐसे बैठ गई है, जैसे समय का उन्हें कुछ होश ही नहीं हो । वह बताये कि साढ़े नौ बज गये । पर क्या फायदा, कह देंगी, ‘अभी आता होगा ।’

वह सब समझता है । अब उतना बुद्धू नहीं है । मम्मी को शायद अच्छा नहीं लग रहा है कि बंटी पापा के पास जा रहा है । पर क्यों नहीं लग रहा है ? उसकी तो पापा से लड़ाई नहीं है । पर ऐसा होता है शायद ।

एक बार क्लास में विभु से उसकी लड़ाई हो गई थी तो उसने अपने सब दोस्तों की विभु से कुट्टी नहीं करवा दी थी ? शायद मम्मी भी चाहती हैं कि वह भी पापा से कुट्टी कर ले । तो मम्मी उससे कहतीं । अच्छा मान लो मम्मी उससे कहतीं तो वह कुट्टी कर लेता ? और उसके मन में न जाने कितनी चीजें तैर गईं - कैरम बोर्ड, व्यू मास्टर, मैकेनो, ग्लोब...

तभी हीरालाल की छोटी लड़की आई, ‘बापू को ताव चढ़ा है, वे नहीं आ सकेंगे ।’

‘क्या हो गया ?’ मम्मी की आवाज में जरा भी परेशानी नहीं है । हाँ, उनका क्या बिगड़ता है । वे तो चाहती ही है कि मैं नहीं जाऊँ । मैं जरूर जाऊँगा, चाहे कुछ भी हो जाये ।

‘भोत जोर का ताप चढ़ा है, सीत देकर । वे तो गूदड़े ओढ़कर पड़े हैं, मुझे इत्तिला देने को भेजा है ।’ और वह चली गई ।

‘अब ?’ बंटी रोने-रोने को हो आया ।

मम्मी एक क्षण चुप रहीं । फिर फूफी को बुलाकर कहा तो फूफी अलग मिजाज दिखाने लगी, ‘बहूजी, मैं नहीं जाऊँगी वहाँ ।’

‘क्यों ? बस तुम ही मुझे छोड़कर आओगी ।’ बंटी फूफी का हाथ पकड़कर झूल आया, ‘जल्दी चलो, अभी चलो ।’

‘छोड़ आओ फूफी, वरना कौन ले जाएगा ?’ कैसी ठण्डी-ठण्डी आवाज में बोल रही हैं । जैसे कहना है इसलिए कह रही है बस । ले जाये, न ले जाये, कोई फरक नहीं पड़ेगा ।

फूफी एकदम बिफ़र पड़ी, ‘कोई नहीं है ले जानेवाला तो नहीं जाएगा । मिलने की ऐसी ही बेकली है तो खुद आकर ले जाएँगे । इस घर में आ जाने से तो कोई धरम नहीं बिगड़ जाएगा । आप जो चाहे सजा दे लो बहूजी, मैं वहाँ नहीं जाऊँगी । मुझसे तो आप जानो...’

और बड़बड़ाती हुई फूफी चली गई । मम्मी ने कुछ भी नहीं कहा । मम्मी का अपना काम होता तो कैसे बिगड़ती । अब फूफी को कहो न कि बिगड़ती जा रही है, ढीठ होती जा रही है । बस डाँटने के लिए मैं ही हूँ । ठीक है कोई मत ले जाओ मुझे । और बंटी एकदम वहीं पसरकर रोने लगा ।

‘रो क्यों रहा है ? यह भी कोई रोने की बात है भला ? ठहर जा, कालेज के माली को बुलवाती हूँ ।’

मम्मी माली को समझा रही है, ‘देखो, कह देना कि आठ बजे तुम लेने आओगे, इसलिए जहाँ कहीं भी हों, आठ बजे तक सरकिट हाउस पहुँच जायें । तू भी कह देना रे । आठ से देर नहीं करें, समझे !’ कैसी सख्त-सख्त आवाज में बोल रही हैं, एकदम प्रिंसिपल की तरह ।

रास्ते भर बंटी सोचता गया कि बहुत सारी बातें हैं जो वह पापा से पूछेगा । मम्मी से पूछी नहीं जाती । कभी शुरू भी करता है तो या तो मम्मी उदास हो जाती हैं या सख्त । उदास मम्मी बंटी को दु:खी करती हैं और सख्त मम्मी उसे डराती हैं । और इधर तो मम्मी को पता नहीं क्या कुछ होता जा रहा है । पास लेटी मम्मी भी उसे बहुत दूर लगती है । उसके और मम्मी के बीच में जरूर कोई रहता है । शायद वकील चाचा की कही हुई कोई बात, शायद

कोई गड़बड़ी । उसे कोई कुछ नहीं बताता, वह अपने-आप समझे भी क्या ? मम्मी की बात तो पापा से भी नहीं पूछी जा सकती है ।

पर एक बात वह जरूर पूछेगा कि क्या तलाकवाली कुट्टी में कभी अब्बा नहीं हो सकती ? अगर पापा भी साथ रहने लगें तो कितना मजा आये । पर ऐसी बात पूछने पर पापा ने डाँट दिया तो ?

पापा बाहर ही मिल गये । बंटी देखते ही दौड़ गया और पापा ने उठाकर छाती से लगा लिया, 'बंटी बेटा !' और दोनों गालों पर ढेर सारे किस्सू दे दिये ।

शाम को तांगे में बिठाकर पापा ने उसे घुमाया । आइसक्रीम खिलाई, चाट खिलाई । गन्ने का रस पिलाया । बंटी सोच रहा था कि पापा शायद कुछ चीजें और दिलवायेंगे । लेकिन उन्होंने कुछ नहीं दिलवाया तो बंटी को थोड़ी-सी निराशा हुई । पर फिर भी उससे माँगा नहीं गया । खा-पीकर, घूम-फिरकर शाम को वे लोग वापस आ गये । तांगे से उतरकर बंटी भीतर जाने लगा कि एकदम पापा की चिल्लाहट सुनाई दी । मुड़कर देखा । पापा तांगेवाले को डाँट रहे थे । पता नहीं तांगेवाले ने क्या कहा कि पापा और जोर से चिल्लाये, 'झूठ बोलते हो ? घड़ी देखकर तांगा किया था । मैं एक पैसा भी ज्यादा नहीं दूँगा ।'

बंटी सहमकर जहाँ का तहाँ खड़ा हो गया ।

तांगेवाले ने कुछ कहा और कूदकर तांगे से नीचे उतर आया । पापा एकदम चीख पड़े, 'यू शट अप ! जबान संभालकर बात करो । जितना रहम खाओ उतना ही सिर पर चढ़े जा रहे हैं, जूते की नोक पर ही ठीक रहते हैं ये लोग...' पापा का चेहरा एकदम सुर्ख हो रहा था और आँखों से जैसे आग बरस रही थी । बंटी की साँस जहाँ की तहाँ रुक गई । चपरासी और दरबान ने बीच-बचाव करके तांगे को रवाना किया ।

पापा अभी भी जैसे हाँफ रहे थे और बंटी सहमा हुआ था । उसने पापा को कभी गुस्सा होते हुए तो देखा ही नहीं । एकाएक खयाल आया, कभी इसी तरह उस पर गुस्सा हों तो ? वह भीतर तक काँप गया । एकाएक उसे बड़ी जोर से मम्मी की याद आने लगी । अब वह एकदम मम्मी के पास जाएगा । माली आया या नहीं ?

तभी चपरासी ने कहा, 'बाबा को लेने के लिए आदमी आया था । आधा घंटे तक बैठा भी रहा, अभी-अभी गया है, बस आपके आने के पाँच मिनट पहले ही ।'

बंटी की आँखों में आँसू आ गये । किसी तरह उन्हें आँखों में ही पीता हुआ वह बड़ी असहाय सी नज़रों से पापा की ओर देखने लगा । मन में समाया हुआ एक अनजान डर जैसे फैलता ही जा रहा था ।

पापा ने एक बार घड़ी की तरफ नज़र डाली, 'चपरासी चला गया तो ? यह भी अच्छा तमाशा है, घड़ी देखकर घर में घुसो । जो समय उधर से दिया गया है उसी में घूमो-फिरो और लौट आओ । नोंनसेंस !'

एकाएक ही बंटी की छलछलाई आँखें बह गईं । पता नहीं माली के लौट जाने की बात सुनकर या कि पापा का गुस्सा देखकर या कि इस भय से कि पापा कहीं रात में यहीं रहने को न कह दें । दो दिन से पापा को लेकर जो उत्साह मन में समाया हुआ था, वह एकदम बुझ गया और सामने खड़े पापा उसे निहायत अजनबी और अपरिचित से लगने लगे ।

'अरे तुम रो क्यों रहे हो ? रोने की बात क्या हो गई ?'

'माली चला गया, अब मैं घर कैसे जाऊँगा ?' सिसकते हुए बंटी ने कहा ।

'पागल कहीं का । यहाँ क्या जंगल में बैठा है ? मैं नहीं हूँ तेरे पास ?'

'मम्मी के पास जाऊँगा ।' रोते-रोते ही बंटी ने कहा ।

'हाँ-हाँ, तो मैंने कब कहा कि मम्मी के पास नहीं जाओगे ।'

'पर माली तो चला गया ?'

'चला गया तो क्या ? मैं तुम्हें छोड़कर आऊँगा, बस ।'

बंटी ने ऐसे देखा जैसे विश्वास नहीं कर रहा हो । कहीं उसे बहका तो नहीं रहे । अभी चुप करने के लिए कह दें और फिर कहने लगें कि सो जाओ ।

पापा ने पास आकर उसका माथा सहलाया, गाल सहलाये, तो टूटा विश्वास जैसे फिर जुड़ने लगा । पापा फिर अपने लगने लगे ।

'पागल कहीं का । इतना बड़ा होकर रोता है मम्मी के लिए ।' तो अँसुवाई आँखों से ही बंटी हँस दिया । भीतर ही भीतर बड़ी शर्म भी महसूस हुई अपने ऊपर । सचमुच उसे इतनी जल्दी रोना नहीं चाहिए । बच्चे रोया करते हैं बात-बात पर वह तो अब बड़ा हो गया है । अब कभी नहीं रोएगा इस तरह ।

बंटी पापा के साथ तांगे में बैठा तो मन एकदम हल्का होकर दूसरी ओर को दौड़ गया । पापा को देखकर मम्मी को कैसा लगेगा ? एकदम खुश हो जाएँगी । वह खींचकर पापा को अंदर ले जाएगा और मम्मी का हाथ, पापा का

हाथ मिला देगा – चलो कुट्टी खत्म । फिर मम्मी और वह मिलकर पापा को जाने ही नहीं देंगे । सोते, घूमते–फिरते कितनी बार मन हुआ था कि मम्मी की बात करे । पापा से सब पूछे, जो मम्मी से नहीं पूछ पाता है । पर पापा का चेहरा देखता और बात भीतर ही घुमड़कर रह जाती । पर पापा को साथ लाकर और दोस्ती की बात सोच–सोचकर उसका मन थिरकने लगा ।

जाने कैसे–कैसे चित्र आँखों के सामने उभरने लगे । पापा, मम्मी और वह घूमने जा रहे हैं । पापा उसके साथ खेल रहे हैं । वह पापा के साथ मिलकर मम्मी को चिढ़ा रहा है या कभी मम्मी के साथ मिलकर पापा को ।

अजीब–सा उत्साह है जो मन में नहीं समा रहा है । कहानियों के न जाने कितने राजकुमार मन में तैर गये, जो अपनी अपनी माँ के लिए समुद्र तैर गये थे या पहाड़ लाँघ गये थे । वह भी किसी से कम नहीं है । माँ के लिए पापा को ले आया । अब दोस्ती भी करवा देगा । वरना कोई ला सकता था पापा को ? अब चिढ़ाये फूफी कि बंटी लड़की है । अब मम्मी कभी उदास नहीं होंगी । लेटे–लेटे छत या आसमान नहीं देखेंगी । टीटू की अम्मा यह नहीं पूछेंगी, 'आते हैं तुम्हारे पापा यहाँ ?'

उसने बड़े थिरकते मन से पापा की ओर देखा । पापा एकदम चुप क्यों हैं ? अंधेरे में चेहरा ठीक से नहीं दिखाई दे रहा है । वह चाहता है पापा कुछ बोलते चलें, कलकत्ता चलने की बात ही कहें या कि उसे लड़कोंवाले खेल खेलने की बात ही कहें, पर कुछ तो कहें । बोलते हुए पापा उसे अपने बहुत पास लगने लगते हैं । चुप हो जाते हैं तो लगता है जैसे पापा कहीं दूर चले गये । जैसे उसके और पापा के बीच में कोई और आ गया ।

उसी निकटता को महसूस करने के लिए उसने अनायास ही पापा का हाथ पकड़ लिया ।

पर पापा हैं कि बिलकुल चुप । पापा की चुप्पी से बंटी के मन में अजीब तरह की बेचैनी घुलने लगी । कहीं दोस्ती की बात करते ही पापा चिल्लाने लगें आँखें लाल–लाल करके तो ? पापा का वही चेहरा उभर आया । ऐसे चिल्लाते होंगे तभी शायद मम्मी ने कुट्टी कर ली होगी । बंटी ने फिर एक बार पापा की ओर देखा । अंधेरे में पापा का चेहरा दिखाई नहीं दे रहा ।

'बस, बस यही घर है, बाईं तरफवाला ।' कालेज के पास आते ही तांगा थम गया था । बंटी ने कहा तो तांगेवाले ने बाईं तरफ को लगा दिया ।

बंटी ने हाथ और कसकर पकड़ लिया । हाथ पकड़े–पकड़े ही वह तांगे से नीचे उतरा और एक तरह से पापा को खींचता हुआ गेट की तरफ चला । उसे लग रहा था कि यदि उसकी पकड़ जरा भी ढीली हुई तो पापा छूटकर चल देंगे ।

सड़क पर से वह चिल्लाया, 'मम्मी, पापा आये हैं !'

लोन में से एक छायाकृति तेज–तेज कदमों से फाटक की ओर आई । फाटक खुला और मम्मी सामने आ खड़ी हुई । मम्मी को देखते ही बंटी का हौसला बढ़ गया । लगा जैसे वह अपनी सुरक्षित सीमा में आ गया है । पापा के हाथ को पूरी तरह खींचता हुआ बोला, 'भीतर चलिए न पापा ? मैं अपना बगीचा दिखाऊँगा । मोगरा खूब फूला है ।'

पर मम्मी और पापा जहाँ के तहाँ खड़े हुए हैं, चुप और जड़ बने हुए ।

'मैंने आदमी भेजा था । आपको शायद लौटने में देर हो गई । सो वह राह देखकर चला आया । आपको तकलीफ करनी पड़ी ।'

'कोई बात नहीं ।' बंटी ने चौककर पापा की ओर देखा । यह पापा बोले थे ?

एकदम बदला हुआ स्वर । न प्यारवाला, न गुस्सेवाला । पता नहीं उस स्वर में ऐसा क्या था कि बंटी की पकड़ ढीली हो गई । फिर भी उसने कहा, 'पापा, एक बार भीतर चलिए न । मम्मी, तुम कहो न ।' बंटी रुआँसा हो गया ।

'कुछ देर बैठ लीजिए । बच्चे का मन रह जाएगा ।' मम्मी कैसे बोल रही है ? किसी को ऐसे कहा जाता होगा ठहरने के लिए ?

'रात हो गई है, फिर लौटने में बहुत देर हो जाएगी ।'

'इसी तांगे को रोक लीजिए, अभी कहाँ देर हुई है, चलिए न ।' हाथ पर झूलते हुए बंटी ने पापा को भीतर खींच ही लिया । पापा भीतर आये । लॉन में ही मम्मी–पापा आमने–सामने कुर्सी पर बैठ गये । बंटी पुलकित । उसे समझ नहीं रही कि क्या करे और कैसे करे ।

शब्दार्थ

सहमना डरना **ढीठ** उद्दंड, बेअदब **इत्तिला** सूचना **बेकली** बेचैनी **सुर्ख** लाल **निहायत** बहुत ज्यादा, अत्यधिक

मुहावरे

बोलती बंद कर देना चुप कर देना **आँखें छलछला आना** रोना **मन थिरकने लगना** आनंदित होना **आँखें लाल करना** गुस्सा करना **चेहरा सुर्ख होना** शर्म या गुस्से से चेहरा लाल होना **छाती से लगा देना** बहुत प्यार करना

● ● ●